लेकर अपने देश में चले गए जैसे महमूद गजनवी, मुहम्मद गौरी, चंगेज खान आदि-आदि। बाद में इन राजाओं ने अपने राज्य का विस्तार करने के लिए युद्ध करके भारत के राजाओं को हराकर भारत में अपना राज्य प्रस्थापित किया और उसी से ही मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई। मुगल सम्राट जहांगीर के राज्य दरबार में ही अंग्रेजी हुकूमत के लोग भारत के साथ व्यापार करने का लाइसेन्स लेने के लिए आये और व्यापार के नाम पर भारत में उन्होंने अपना अड्डा जमाकर भारत में ब्रिटिश राज स्थापित किया।

दक्षिण भारत में मुगल साम्राज्य के दिनों में ही शिवाजी महाराज ने भी अपना मराठा राज्य स्थापन करने का प्रयास किया और उसके कारण औरंगजेब को अनेक वर्षों तक दिल्ली छोड़ कर दक्षिण भारत में ही रहना पड़ा और इसी कारण उन्होंने अपनी दूसरी राजधानी दक्षिण भारत में प्रस्थापित की। शुरू में तो मराठा साम्राज्य के शिवाजी महाराज बहुत अच्छी तरह से कारोबार करते रहे। मराठा साम्राज्य के संचालन के लिए उन्होंने बड़ौदा, इन्दौर तथा ग्वालियर में सूबेदारों की नियुक्ति की परंतु बाद में पूणे में उनकी उत्तराधिकारी जो पेशवा सरकार थी, वो इतनी ताकत वाली नहीं रही, जिस कारण वे सूबेदार खुद ही राजा बन गए और मराठा राज्य का विभाजन हुआ। परिणामरूप, वे अंग्रेज़ सत्ता के प्यादे बन गए। इस प्रकार राज्यों का विस्तार होने से भारत के अंदर तथा भारत के बाहर भी भारत की संस्कृति तथा सभ्यता का विस्तार होने लगा। पश्चिम में इजिप्त अर्थात् मिश्र, फिर वहाँ से ग्रीस और उसके बाद रोम में भी इसी संस्कृति का विस्तार होने लगा। इजिप्त में पिरामिडों की संस्कृति बनी, ग्रीस में तत्वज्ञान की, रोम के बादशाहों ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया और रशिया में जार वंश के राजाओं का कारोबार चला, इस प्रकार से कारोबार सारी दुनिया में फैलता गया।

स्पेन का कोलंबस, भारत आने के बदले अमेरिका पहुँच गया और उत्तरी अमेरिका तथा दक्षिणी अमेरिका के देशों का पता किया। वहाँ की उपजाऊ ज़मीन और खनिज पदार्थों के अतुल भंडार के कारण वहाँ की समृद्धि बहुत बढ़ गई। सोना आदि वहाँ की खानों से बहुत निकलने लगा।

वास्कोडिगामा ने अफ्रीका का चक्कर लगाकर भारत का रास्ता ढूँढ लिया। बाद में अपना राज्य कारोबार भी किया जिसमें ज्यादा सफलता अंग्रेज़ों को मिली, थोड़ी सफलता फ्रांस एवं पुर्तगाल को भी मिली।

धीरे-धीरे अफ्रीका, उसके बाद ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में भी लोग जाकर बसने लगे। यूरोप से ऐसे लोगों को बन्दी बनाकर ऑस्ट्रेलिया भेजा गया जो यूरोप के अंदर अशान्ति फैला रहे थे। इस प्रकार वहाँ जनसंख्या की वृद्धि कराई गई। भारत से भी कई लोगों को खेती आदि करने के लिए मॉरिशियस, वेस्ट इंडीज आदि देशों में लेकर गये।

राज्य विस्तार के साथ-साथ नये-नये धर्मों की स्थापना भी हुई जैसे कि मोजेज द्वारा यहूदी धर्म, इब्राहम द्वारा इस्लाम धर्म, मोहम्मद पैगम्बर द्वारा मुस्लिम धर्म आदि-आदि। भारत की संस्कृति के साथ इन सबका अच्छा संबंध था। राम, सीता और लक्ष्मण के भित्ती चित्र *(Wall Painting)* आदि आज भी रोम में मिलते हैं। यहूदी धर्म के स्थापक मोजेज का बड़ा भाई जिसका नाम रामसे था अर्थात् राम से संबंधित था, उनके जीवन के बारे में वर्णन आता है कि उन्होंने मिश्र देश में नील नदी के किनारे मंदिर बनाया। इस तरह से धर्मों की भी स्थापना होती रही और जैसा कि अव्यक्त बापदादा ने बताया है कि हम बच्चे जो कल्पवृक्ष के तने में हैं, हमारे ही द्वारा अन्य सभी धर्मों की शाखायें निकली और उनकी वृद्धि हुई है।

मैंने पहले भी ज्ञानामृत में लिखा है कि जब दादी पुष्पशांता की बेटी सुशीला ने अपने ट्रस्ट के कारोबार के ऑफिस को कोलाबा सेवाकेन्द्र पर